



राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन

योगेश मिश्रा¹

¹सहायक प्रोफेसर, सेठ श्री सूरजमल तापडिया आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जसवन्तगढ़, नागौर।

शोध-सारांश

नेतृत्व एक प्रकार का प्रबन्धन है। जिसमें संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति सर्वोपरि होता है। नेतृत्व दूसरों को अनुसरण करने के लिए प्रभावित करने की क्षमता होती है। अतः लोगों को अपने निर्देशानुसार चलाने की क्षमता ही नेतृत्वशीलता होती है।

नेतृत्व की प्रभावशीलता बहुत हद तक नेतृत्व की शैली पर निर्भर करती है। नेतृत्व के ढंग को नेतृत्व शैली कहा जाता है। अर्थात् “नेतृत्व करने का कौशल” नेतृत्व शैली कहलाता है।

नेतृत्व शैली विशेष प्रकार की व्यवहार कुशलता है जो समूह के प्रत्येक सदस्य को लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है। नेतृत्व की शैली से तात्पर्य प्रधानाचार्य द्वारा शिक्षा देने, योजनाओं को लागू करने तथा लोगों को प्रोत्साहित करने की क्षमता से है। नेतृत्व व्यवहार को ही नेतृत्व शैली कहा जाता है।

नेतृत्व शैली एक प्रधानाचार्य की दिशा-निर्देश प्रदान करने, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अधीनस्थों को प्रेरित करने के तरीके को प्रदर्शित करती है। नेतृत्व शैली में प्रधानाचार्य का व्यक्तित्व, व्यवहार, मार्गदर्शन, आत्मविश्वास, सजगता एवं सम्प्रेषण तकनीक आदि सम्मिलित होते हैं।

प्रधानाचार्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों एवं व्यवहारों को सम्मिलित रूप से नेतृत्व शैली कहा जाता है। प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली एवं प्रशासकीय क्षमता पर ही विद्यालय की प्रगति निर्भर करती है।

सामान्यतः नेतृत्व शैली संगठन लक्ष्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रधानाचार्य द्वारा अपनाया जाने वाला मार्ग है। विद्यालय में परिस्थितियों के अनुसार प्रधानाचार्य अपनी सूझ-बूझ के साथ उपयुक्त नेतृत्व शैली का चयन करता है।

मुख्यशब्द: नेतृत्व, नेतृत्व शैली, प्रधानाचार्य।

प्रस्तावना

नेतृत्व की आवश्यकता हमें हर क्षेत्र में होती है, चाहे प्रशासनिक क्षेत्र हो, चाहे राजनैतिक क्षेत्र हो या चाहे शैक्षिक क्षेत्र हो, बिना नेतृत्व के किसी कार्यक्रम को गति नहीं मिल सकती, न कोई योजना पूरी हो सकती है और न ही नेतृत्व के बिना किसी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

नेतृत्व एक प्रकार का प्रबन्धन है। जिसमें संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति सर्वोपरि होता है। नेतृत्व दूसरों को अनुसरण करने के लिए प्रभावित करने की क्षमता होती है। अतः लोगों को अपने निर्देशानुसार चलाने की क्षमता ही नेतृत्वशीलता होती है।

“एक अच्छा नेता या तो रास्ता तलाश लेता है या बना लेता है।”

बर्टन के अनुसार “नेतृत्व का कार्य किसी योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन है जो कि उसके लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है।”

शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्वकर्ता के रूप में विभिन्न नाम आते हैं। जैसे विश्वविद्यालय का कुलपति, विद्यालय का प्रधानाचार्य, संस्था का निदेशक आदि। इन सभी पर संस्थागत लक्ष्यों को प्राप्त करने का दायित्व होता है।

विद्यालयों में शिक्षकों का तथा सभी कर्मचारियों का नेतृत्व विद्यालय का प्रधानाचार्य करता है। प्रधानाचार्य का नेतृत्व तभी सफल माना जाता है जब सभी शिक्षक एवं कर्मचारी उसकी योग्यता, अनुभव, कार्यकुशलता तथा ज्ञान से प्रभावित होकर उसे सहयोग देते हैं और उसके आदेशों का हृदय से स्वागत करते हैं।

नेतृत्व की प्रभावशीलता बहुत हद तक नेतृत्व की शैली पर निर्भर करती है। नेतृत्व के ढंग को नेतृत्व शैली कहा जाता है। अर्थात् “नेतृत्व करने का कौशल” नेतृत्व शैली कहलाता है।

नेतृत्व शैली विशेष प्रकार की व्यवहार कुशलता है जो समूह के प्रत्येक सदस्य को लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है। नेतृत्व की शैली से तात्पर्य प्रधानाचार्य द्वारा शिक्षा देने, योजनाओं को लागू करने तथा लोगों को प्रोत्साहित करने की क्षमता से है। नेतृत्व व्यवहार को ही नेतृत्व शैली कहा जाता है।

नेतृत्व शैली एक प्रधानाचार्य की दिशा-निर्देश प्रदान करने, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अधीनस्थों को प्रेरित करने के तरीके को प्रदर्शित करती है। नेतृत्व शैली में प्रधानाचार्य का व्यक्तित्व, व्यवहार, मार्गदर्शन, आत्मविश्वास, सजगता एवं सम्प्रेषण तकनीक आदि सम्मिलित होते हैं।

प्रधानाचार्यो द्वारा किए जाने वाले कार्यो एवं व्यवहारों को सम्मिलित रूप से नेतृत्व शैली कहा जाता है। एक सफल प्रधानाचार्य प्रत्येक परिस्थिति में एक संगत नेतृत्व शैली को ही अपनाने का प्रयत्न करता है। प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली संगठन की प्रकृति एवं बाह्य समुदायों के साथ उसके सम्बन्धों में प्रदर्शित होती है। प्रधानाचार्य का अपने संगठन में नेतृत्व का सम्प्रत्यय एवं प्रधानाचार्य द्वारा संगठन को निर्देशित करने की तकनीक आदि के संयोजित रूप से प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली निर्मित होती है। एक संगठन में नेतृत्व की अवधारणा, निर्देशन विधियाँ, परिवर्तन हेतु अभिवृत्ति आदि द्वारा प्रधानाचार्य की विभिन्न नेतृत्व शैलियों का निर्धारण होता है। विद्यालय की उन्नति में प्रधानाचार्य की प्रमुख भूमिका होती है। प्रधानाचार्य के सभी क्रियाकलापों का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों पर पड़ता है। प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली एवं प्रशासकीय क्षमता पर ही विद्यालय की प्रगति निर्भर करती है।

प्रधानाचार्यो द्वारा अपनाई जाने वाली तीन प्रमुख नेतृत्व शैली इस प्रकार है:-

1. अधिकारिक नेतृत्व शैली
2. प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली
3. अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली

1. अधिकारिक नेतृत्व शैली

इस नेतृत्व शैली में प्रधानाचार्य द्वारा शिक्षकों से बिना विचार-विमर्श किये ही सभी निर्णय किये जाते हैं। प्रधानाचार्य हमेशा अपने शिक्षकों पर दबाव बनाये रखता है। प्रधानाचार्य द्वारा आदेश दिए जाते हैं तथा शिक्षकों द्वारा बिना किसी विरोध के उस आदेश का पालन किया जाता है। अनुशासन के लिये दण्ड का उपयोग अधिक किया जाता है।

2. प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली

इस नेतृत्व शैली में प्रधानाचार्य सभी कार्यो में शिक्षकों के योगदान को प्रोत्साहित करता है। प्रधानाचार्य द्वारा शिक्षकों से विचार-विमर्श के बाद ही कोई निर्णय लिया जाता है। प्रधानाचार्य सभी के साथ मिलकर कार्य करने पर बल देता है। प्रधानाचार्य अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं करता है। प्रधानाचार्य द्वारा संस्था के सभी सदस्यों के बीच उत्तम स्थिति बनाने का प्रयास किया जाता है। प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली को सबसे प्रशंसित नेतृत्व शैली माना जाता है।

3. अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली

इस नेतृत्व शैली में प्रधानाचार्य सभी कार्य एवं समस्याएँ शिक्षकों पर डाल देता है तथा शिक्षकों से ही आशा की जाती है कि वे स्वविवेक से प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करें। प्रधानाचार्य शिक्षकों को कोई निर्देश नहीं देता है और न ही कोई मार्गदर्शन प्रदान करता है।

सामान्यतः नेतृत्व शैली संगठन लक्ष्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रधानाचार्य द्वारा अपनाया जाने वाला मार्ग है। विद्यालय में परिस्थितियों के अनुसार प्रधानाचार्य अपनी सूझ-बूझ के साथ उपयुक्त नेतृत्व शैली का चयन करता है। प्रधानाचार्य द्वारा उपयुक्त नेतृत्व शैली द्वारा विद्यालय के सभी शिक्षकों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

एक कुशल नेतृत्व शैली का विद्यालय के सफल संचालन में विशेष योगदान होता है। विद्यालय की समग्र गतिविधियाँ प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली पर आधारित होती हैं। एक कुशल प्रधानाचार्य अपनी विशेष नेतृत्व शैली द्वारा विद्यालय को निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का विद्यालय की प्रगति पर क्या प्रभाव पड़ता है? प्रधानाचार्य द्वारा किस प्रकार अपने नेतृत्व शैली का उपयोग करते हुए विद्यालय का सफल संचालन किया जाता है? इस तथ्य को लेकर शोधकर्त्री ने उक्त समस्या पर शोध आलेख प्रस्तुत किया है।

शोध उद्देश्य

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का पता लगाना।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की तुलना करना।

शोध परिकल्पना

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

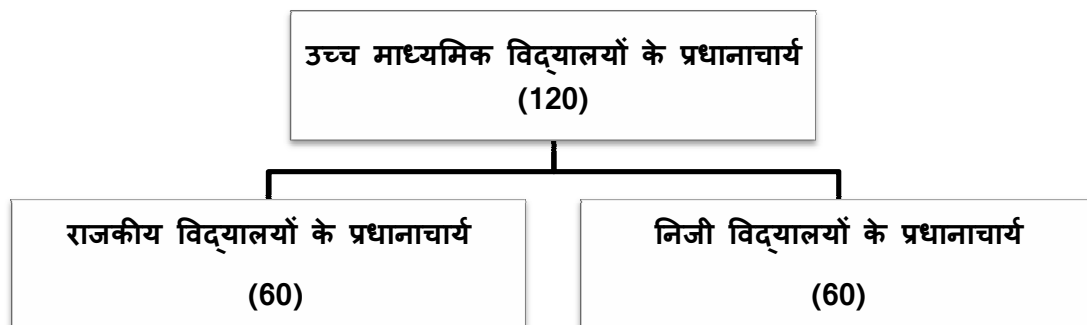
शोध विधि

शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से 120 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का चयन किया गया। जिसके अन्तर्गत 60 राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का तथा 60 निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का चयन किया गया।

न्यादर्श विवरण इस प्रकार है –



शोध उपकरण

प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली जानने हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया, जो इस प्रकार है:-

“प्रधानाचार्यों के लिए प्रश्नावली”

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी-परीक्षण
- प्रतिशत

शोध परिसीमन

शोधकार्य को उदयपुर जिले के राजकीय और निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया।

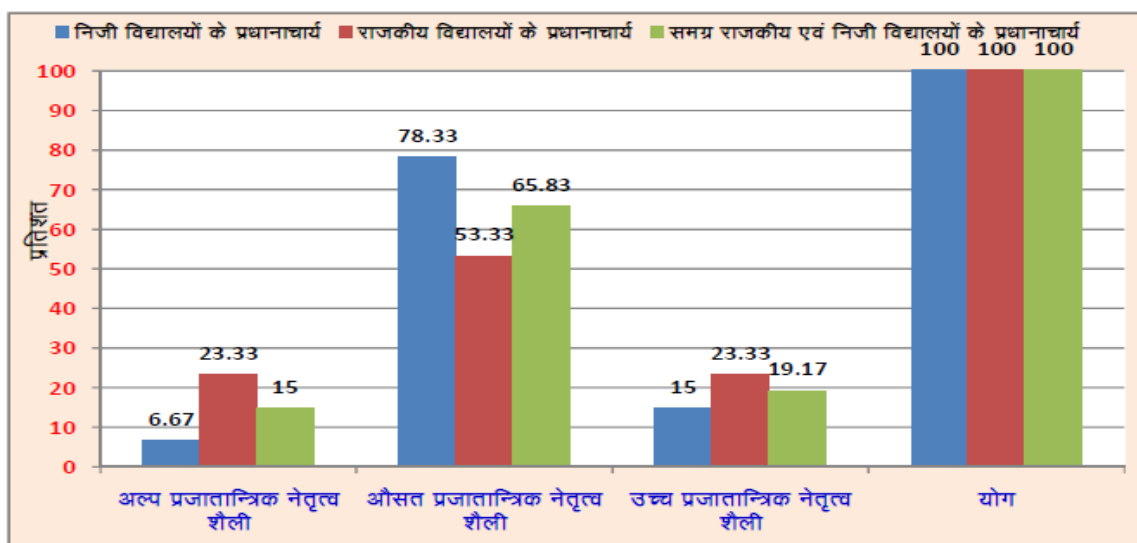
सारणीयन एवं विश्लेषण

सारणी संख्या 1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली का विवरण

नेतृत्व शैली		नेतृत्व शैली के लिए अंक	निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य		राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य		समग्र राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	
			न्यादर्श	प्रतिशत (%)	न्यादर्श	प्रतिशत (%)	न्यादर्श	प्रतिशत (%)
अल्प प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली	Less than Mean-SD	<74	4	6.67	14	23.33	18	15.00

औसत प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली	Mean-SD to Mean+SD	74 to 87	47	78.33	32	53.33	79	65.83
उच्च प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली	More than Mean+SD	>87	9	15.00	14	23.33	23	19.17
योग			60	100.00	60	100	120	100

SD = Standard Deviation



आरेख संख्या 1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली का विवरण

व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि

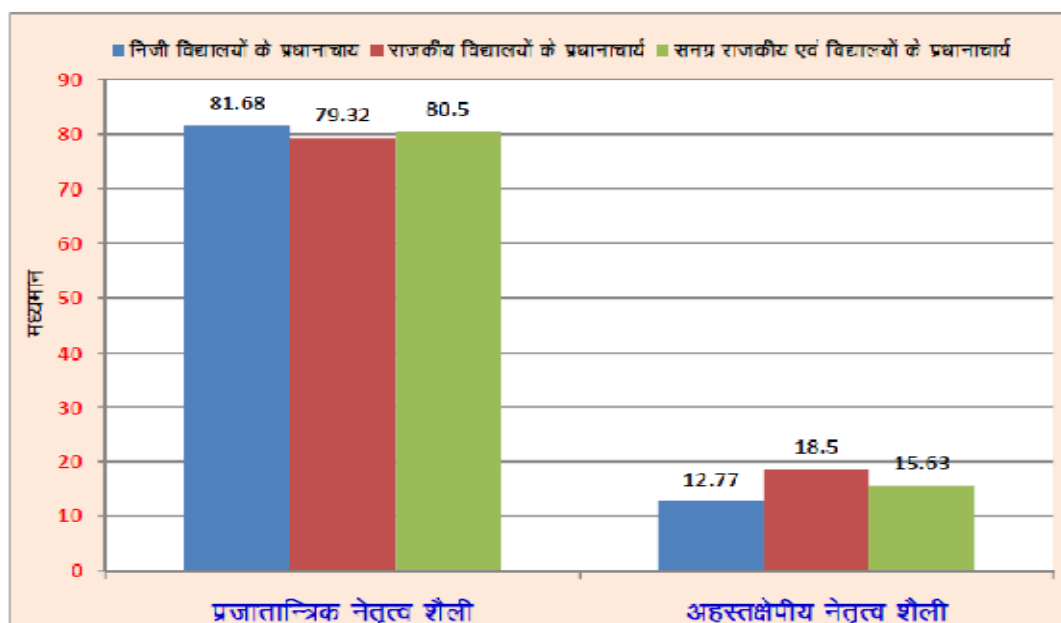
- निजी विद्यालय के 6.67 प्रतिशत प्रधानाचार्य अल्प प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- निजी विद्यालय के 78.33 प्रतिशत प्रधानाचार्य औसत प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- निजी विद्यालय के 15.00 प्रतिशत प्रधानाचार्य उच्च प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- राजकीय विद्यालय के 23.33 प्रतिशत प्रधानाचार्य अल्प प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- राजकीय विद्यालय के 53.33 प्रतिशत प्रधानाचार्य औसत प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- राजकीय विद्यालय के 23.33 प्रतिशत प्रधानाचार्य उच्च प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- समग्र राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 15.00 प्रतिशत प्रधानाचार्य अल्प प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।

- समग्र राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 65.83 प्रतिशत प्रधानाचार्य औसत प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।
- समग्र राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 19.17 प्रतिशत प्रधानाचार्य उच्च प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली अपनाते हैं।

सारणी संख्या 2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की तुलना

	अधिकतम अंक मान		निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य	टी-मान	सार्थकता का स्तर	समग्र राजकीय एवं विद्यालयों के प्रधानाचार्य
प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली	112	मध्यमान	81.68	79.32	1.82	सार्थक नहीं है।	80.5
		मानक विचलन	6.88	7.34			7.18
		न्यादर्श	60	60			120
अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली	104	मध्यमान	12.77	18.5	5.11	.01 स्तर पर सार्थक है।	15.63
		मानक विचलन	6.88	5.29			6.75
		न्यादर्श	60	60			120

स्वतंत्रता की कोटि (df)=118



आरेख संख्या 2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की तुलना

व्याख्या

सारणी क्रमांक 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली का मध्यमान 79.32 तथा निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली का मध्यमान 81.68 प्राप्त होता है। दोनों मध्यमानों से टी-मान प्राप्त करने पर 1.82 प्राप्त होता है, जो कि सारणीमान से कम है। अतः राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

इसी प्रकार राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली का मध्यमान 18.5 तथा निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली का मध्यमान 12.77 प्राप्त होता है। दोनों मध्यमानों से टी-मान प्राप्त करने पर 5.11 प्राप्त होता है, जो कि .01 सार्थकता पर सारणीमान से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य, निजी विद्यालय के प्रधानाचार्यों की तुलना में अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली को अधिक अपनाते हैं।

समग्र राजकीय एवं निजी प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली का मध्यमान 80.5 तथा अहस्तक्षेपीय नेतृत्व का मध्यमान 15.63 प्राप्त होता है। अतः कहा जा सकता है कि समग्र निजी एवं राजकीय प्रधानाचार्य अधिकांशतः प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली को अपनाते हैं तथा कभी-कभी आवश्यकतानुसार अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली को भी अपनाते हैं।

शोध निष्कर्ष

- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 15 प्रतिशत प्रधानाचार्य “अल्प प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली” अपनाते हैं।
- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 65.83 प्रतिशत प्रधानाचार्य “औसत प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली” अपनाते हैं।
- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 19.17 प्रतिशत प्रधानाचार्य “उच्च प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली” अपनाते हैं।
- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की प्रजातान्त्रिक नेतृत्व शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। राजकीय विद्यालयों के

प्रधानाचार्य, निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की तुलना में अहस्तक्षेपीय नेतृत्व शैली को अधिक अपनाते हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से शोधकर्त्री ने प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। शोधकर्त्री ने प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि नेतृत्व शैली का विद्यालय के सफल संचालन में विशेष योगदान होता है। इस अध्ययन के माध्यम से शोधकर्त्री ने स्पष्ट किया है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य परिस्थिति के अनुसार उपयुक्त नेतृत्व शैली का प्रयोग करते हैं। एक कुशल प्रधानाचार्य उपयुक्त नेतृत्व शैली द्वारा विद्यालय को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है।

संदर्भ सूची

- भटनागर, डॉ. आर.पी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2009): 'शिक्षा अनुसंधान', लायल बुक डिपो, मेरठ।
- गुप्ता, डॉ. एस.पी. (2006): 'आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- कपिल, डॉ. एच.के. (2010): 'सांख्यिकी के मूल तत्व' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- ओड़, एल.के. (2010): 'शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- सुखिया, एस.पी. (2008): 'विद्यालय प्रशासन एवं संगठन', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर.ए. (2008): 'शिक्षा प्रबन्धन', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2005): 'सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियाँ', पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
- श्रीवास्तव डॉ. डी.एन. (2011): 'मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- त्रिवेदी, डॉ. आर.एन.; शुक्ला, डॉ. डी.पी. (2013): 'रिसर्च मेथडोलॉजी', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
- वर्मा, जे.पी. (2011): 'विद्यालय प्रबन्धन', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- वर्मा, रामपाल सिंह (1993): 'शैक्षिक मूल्यांकन', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- www.google.com.
- www.wikipedia.com.
- www.study.com.
- www.researchgate.net.
- <http://educationmirror.org>.
- shodhganga.inflibnet.ac.in.
- www.onlineresearchjournals.com.
- www.iosrjournals.org.